लाखों से एक भला

बिमला दत्ता

क्र. 86
दि.
छावनी, जिला इन्दौर

लाखों से एक भला

परिवार कल्याण को आधार बनाकर
लिखी गईं तीन लम्बी कहानियां
नवसाक्षरों के लिए

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

नयी दिल्ली-110002

लाखों से एक भला

बिमला दत्ता

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
'शफीक मेमोरियल'
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110002
टेलीफोन : 3319282

ग्रन्थांक : 150
@ भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ : मूल्य 3.00
पहला संस्करण 1985

मुद्रक :
त्यागी प्रिंटिंग प्रेस
त्रिलोकपुरी
दिल्ली-110091

अपनी ओर से—

सामने एक जंगल है और हांफता हुआ सन्नाटा ! बीच में जंगल के पार जाने के लिए एक ऊबड़खाबड़ रास्ता है। सड़क तो क्या कहेंगे —हां, पतली-सी पगडंडीनुमा एक डगर है। कुछ भी हो, है तो रास्ता ही—जंगल के पार जाने का ! .....

हमारे देश—दुनिया के सबसे बड़े आजाद जनतन्त्र देश—में 'अनपढ़ता' या शालीन भाषा में कह सकते हैं : 'निरक्षरता' एक घना भयावह जंगल ही तो है, जिसे पार करने के लिए आजादी के बाद लगातार हम बीहड़ डगर पर चलते रहे हैं और तमाम उलझनों और आपा-धापी के बावजूद चलते रहने की हमारी यह इच्छा और कोशिश आज भी जारी है। रही बात इस लंबे सफर में चलते रहने के दौरान सफलता की,—तो आंकड़े बोलते हैं कि इस समय हम कहां और किस पड़ाव पर हैं। मानना होगा, और मान भी लेना चाहिए, कि हमारे इस लम्बे सफर की, कुछ अड़चनों और भटकावों के बावजूद एक सही दिशा बरकरार है। उदाहरण जरूरी ही हो तो, बेझिझक अपने इसी पड़ाव का हवाला देना ही काफी होगा कि आपके हाथों में आयी यह पुस्तक नवसाक्षरों के लिए प्रकाशित है।

—जी हां, ये नयी पुस्तकें पिछले दिनों अन्तर्राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा 'ऐस्पेबे' के सहयोग से सूरजकुंड में आयोजित लेखक कार्यशाला में तैयार हुई थीं। इस तरह की कार्यशालाएं भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा पहले भी कारगर रूप से सम्पन्न हुई हैं; लेकिन विषय की विविधता और सर्जनात्मक लेखन की सबरसता के कारण यह सूरज-कुंड कार्यशाला सहज ही अनूठी हो गयी। इस कार्यशाला में राजधानी दिल्ली तथा दूसरे शहरों से आए सजग लेखकों ने पूरी हार्दिकता से हिस्सा लिया और राष्ट्रीय एकता, परिवार कल्याण, जनसंख्या शिक्षा, सामाजिक कुरीतियों, महिला शिक्षा, पर्यावरण, ग्रामीण विकास जैसे विषयों पर खुले मन से लिखा। हमें विश्वास है, उनकी लिखी पुस्तकें नव-साक्षर साहित्य के पाठकों, और शिक्षकों को भी, पूरा सन्तोष अवश्य देंगी।

अंत में, 'ऐस्पेबे' और कार्यशाला में सक्रिय रूप से भागीदार लेखकों के प्रति मैं आभारी हूं। ····· साथ ही, इस कार्यशाला को सफल बनाने के लिए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के अपने सहयोगियों—डॉ० एस० सी० दत्ता, श्री जे० एल० सचदेव और श्री पद्मधर त्रिपाठी को अपना धन्यवाद देता हूं। आमीन !·····

— जे० सी० सक्सेना
महासचिव (अवैतनिक)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002
25 दिसम्बर 1985

तीन लम्बी कहानियां

1. बिछोह 9
2. विनाश देव 14
3. लाखों से एक भला 19

बिछोह

दिल्ली टेसन की बात है। मथुरा की गाड़ी तैयार खड़ी थी। दुखी राम को मथुरा जाना था। उसके साथ उसकी औरत थी। दोनों के छह बालक थे। वे भी आगे-पीछे उनके चिपटे थे।

दुखी राम एक घंटा पहले टेसन पहुंच गया। घुसते-घुसते सबसे छोटा बच्चा बोला—अम्मा अम्मा। मुझे टट्टी लगी है।

चन्दा ने उसे टेसन पर ही एक किनारे बैठा दिया। दुखी राम कहीं से पानी ले आया। बच्चे को साफ किया। सब लोग आगे बढ़े।

अभी दस कदम ही बढ़े होंगे कि दूसरा बच्चा बोला—अम्मा—अम्मा! मुझे सूती आई है। दुखी राम उसे फिर एक किनारे ले गया। उसे सू सू करा दिया। सारा पेशाब पलेटफारम पर ही बहने लगा। दुखीराम ने बालक को उठा लिया। सब लोग फिर आगे बढ़े।

अभी कुछ ही दूर आगे बढ़े होंगे कि चन्दा बोली– अजी ! सुनते हो जी ! बिस्तर कहां है ? तुम्हारी पीठ पर ही तो था। अब तो नहीं है।

दुखी राम सकपकाया। हां बिस्तर तो उसी के पास था। जब वह बच्चे को मुताने गया था तो उसने बिस्तर नीचे रख दिया था। फिर उसने बच्चे को गोद में उठा लिया। बिस्तर वहीं छोड़ दिया था।

दुखी राम बच्चे को उतार कर भागा बिस्तर ढूंढ़ने। काफी खोजबीन के बाद उसे बिस्तर दिखाई पड़ा। वह बिस्तर कोई दूसरा आदमी कोख में दबाए था। दुखी राम ने उस आदमी को धर दबोचा। दोनों की गुत्थमगुत्था हो गई। लोगों ने बीच-बचाव कराया। दूसरा आदमी भाग खड़ा हुआ।

दुखी राम दुःखी होकर अपने परिवार के पास चला।

वहां उसका तीसरा लड़का अपनी मां को मार रहा था। वह कह रहा था–अम्मा-अम्मा ! भूख लगी है। तूने कहा था–टेसन चल कर खाएंगे।

चंदा बच्चे की मार खाती रही। बोली—अरे नासपीटे! बिस्तर तो मिल जाने दे !

दुखी राम ने छोटे बच्चे को संभाला। चन्दो (चन्दा) ने पुटलिया खोली–सब बच्चों के हाथ में रोटी पकड़ायी। उस पर नमक-मिर्च की चटनी रखी। सबने खाया। छोटे बच्चे सी-सी करके रोने लगे। उन्हें मिर्च लग गई थी। दुखी राम फिर भागा पानी लेने। सबको पानी पिलाया। पुटलियां गिनीं, गठड़ियां उठाईं। बच्चों को संभाला। सबके हाथ पकड़े। सब आगे बढ़े।

बच्चों ने चींटी की चाल चलना शुरू कर दिया। बाप उन्हें धकिया-धकिया कर आगे बढ़ा रहा था। बड़े बच्चे छोटे बच्चों को खींच रहे थे। फिर भी कोई-न-कोई पिछड़ ही जाता था। एक पास पहुंचता तो दूसरा ढीला पड़ जाता।

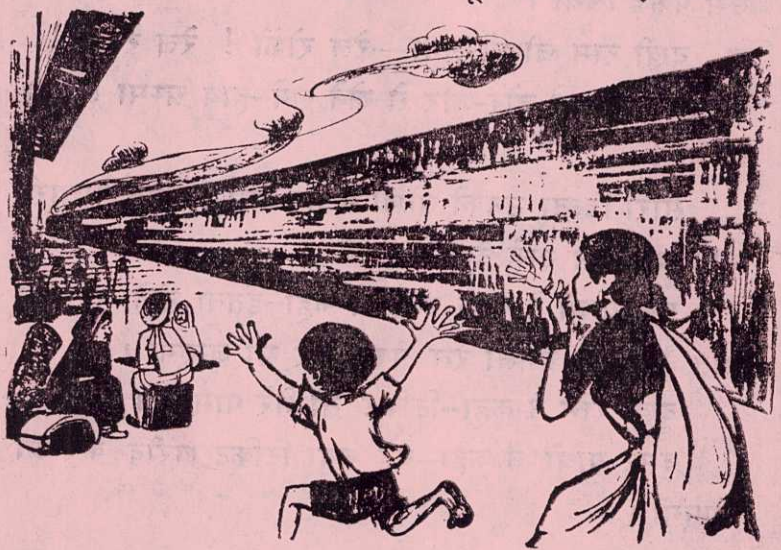

वह दौड़ लगाता तो तीसरा धीमा पड़ जाता।

किसी तरह पूरा परिवार डिब्बे के पास पहुंचा। तभी रेल ने सीटी दे दी। दुखी राम झपट कर गाड़ी के अन्दर घुसा। उसने एक बच्चा ऊपर खींचा, दूसरे को खींचा। तभी रेल ने खिसकना शुरू कर दिया।

चलती रेल में दुखी राम ने तीसरा और चौथा बच्चा खींचा। चंदो ने भागते-भागते पोटलियां अन्दर फेंकी। रेल की रफ्तार तेज हो गई। चंदा पीछे छूट गई। दो बच्चे भी छूट गए।

दुखी राम ने झांक कर देखा—चन्दो बेतहाशा दौड़ रही थी। रेल बराबर तेज होती जा रही थी। दोनों का फासला बढ़ता जाता था। नीचे छूटे दोनों बच्चे भागते जा रहे थे, रोते जा रहे थे।

दुखी राम के हाथों के तोते उड़ गए। रेल बहुत तेज हो गई थी। उसने नीचे कूदने की कोशिश की। लोगों ने उसे पकड़ लिया।

दुखी राम चीखने लगा—रेल रोको ! रेल रोको !

चारों बच्चे जोर-जोर से रोने लगे—हाय अम्मा ! हाय अम्मा !

सारा डिब्बा उनकी चीखों से भर गया। सबने लाचारी भरी आंखों से उन्हें देखा।

एक यात्री ने दुखी राम से कहा—इतना रोने की क्या बात है ? वह अगली रेल पकड़ कर आ जाएगी।

दुखी राम ने कहा—टिकिट तो मेरे पास है।

दूसरे यात्री ने कहा—वह नया टिकिट खरीद कर आ जाएगी।

दुखी राम ने कहा—उसके पास तो पैसे भी नहीं हैं।

बच्चों ने फिर चीख-चीख कर रोना शुरू कर दिया था। डिब्बे के सभी यात्री उन्हें दया से देख रहे थे।

रेल का अगला पड़ाव मथुरा ही था। वह तेज दौड़ने वाली रेल बीच में कहीं नहीं रुकी। रेल दौड़ती रही। दुखी राम अपने बाल धुनता रहा।

उधर चन्दो बदहवास हो गई। अपने होश गंवा बैठी। वह घबरा कर अगली ही रेल में चढ़ गई। वह रेल अलीगढ़ जा रही थी। उसने बच्चों को भी बिठा दिया। तभी टिकिट चैकर ने पूछा—बहन जी ! टिकिट !

चन्दो ने रोना शुरू कर दिया। टिकिट चैकर ने सोचा, यह बहाना है। उन दिनों काफी जोरों से टिकिट की चैकिंग हो रही थी। अलीगढ़ पर सिपाही आए। उन्होंने चन्दो को बिना टिकिट के अपराध में पकड़ लिया।

दोनों बच्चे मां की धोती पकड़ कर फिर रोने लगे। चन्दो ने कहा—नासपीटो, तुम्हारी ही वजह से यह सब हुआ !

महिला सिपाही ने कहा—बच्चों को क्यों गाली दे रही है ? पैदा करने से पहले सोचना चाहिए था ! बच्चे हों उतने, जितने संभलें !□

विनाश देव

एक था कुम्हार। उसका नाम था विश्वकर्मा। विश्वकर्मा मिट्टी की मूर्तियां बनाया करता था। उसकी मूर्तियां बड़ी सुन्दर होती थीं। बनाते ही बिक जाती थीं। उसे इसी मेहनत से खाने-पहनने को मिल जाता था।

कुम्हार की औरत का नाम था तारा। वह भी कुम्हार के साथ काम करती थी। उसके दो बच्चे थे। दोनों बच्चों का नाम था गुड्डू और बब्बू। उन्हें पेट-भर खाने को मिलता था। दिल-भर प्यार मिलता था। इसलिए उसकी सेहत अच्छी थी। वे प्यार से रहते थे।

एक दिन विश्वकर्मा ने सोचा—मैं लक्ष्मी गणेश तो खूब बना लेता हूं, पर विनाश देव कभी नहीं बनाता। अच्छा तो आज विनाश देव की ही मूरत बनाता हूं।

बस, फिर क्या था। विश्वकर्मा ने विनाश देव की मूरत बना डाली। मूरत उसे बहुत अच्छी लगी। वह उस

मूरत को घर उठा लाया। और उसी दिन तारा फिर से गर्भवती हो गई। विश्वकर्मा बहुत खुश हुआ। वह विनाश देव को खूब पूजने लगा।

दिन पूरे होते ही तारा के लड़की हुई। तारा उसे खूब प्यार करती। प्यार में उसे छुटकी कहती। जो प्यार पहले सिर्फ गुड्डू और बब्बू को मिलता, अब वह छुटकी को मिलता। मां को उसे प्यार करते देख गुड्डू और बब्बू जलने लगे। वे जब तब छुटकी को पीट देते थे। छुटकी

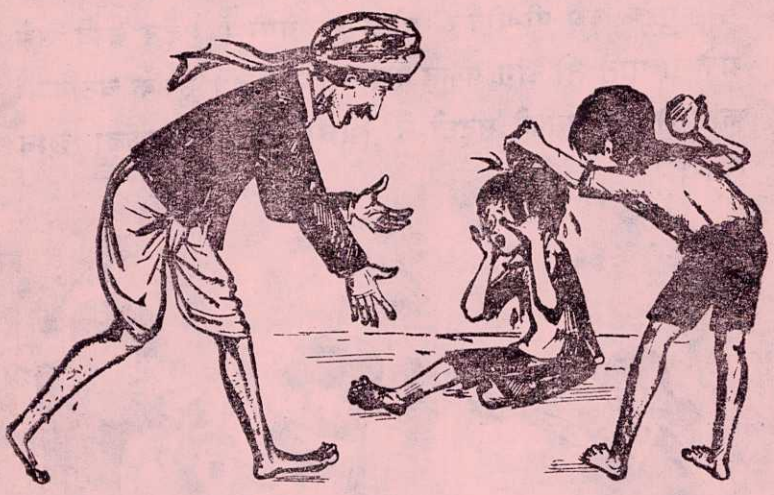

को चुप कराने में उसकी मां का खूब समय लगता। उसका काम पूरा नहीं होता। हालत यहां तक जा पहुंची कि न घर का काम पूरा होता न मूर्तियों का। घर की आमदनी कम होने लगी। घर की हंसी-खुशी में कमी आ गई।

विश्वकर्मा विनाश देव को फूल चढ़ाता। कहता—हे देव ! मुझ पर किरपा बनाए रखना।

विनाश देव ने विश्वकर्मा पर किरपा की कमी नहीं रहने दी। एक साल में ही विश्वकर्मा के यहां एक और

बच्चा जनम गया। वह गुटक-गुटक करके दूध पीता था। इसलिए गुड्डू बब्बू ने उसका नाम रख दिया गुटकू !

छुटकी अभी मां का ही दूध पीती थी। उसे नया बच्चा गुटकू बिल्कुल नहीं सुहाया। गुटकू मां की छाती चूसता तो वह छुटकी छातियों में नाखून गड़ा देती। जब तक छुटकी के दूध पीने की बारी आती, तब तक छातियों का सारा दूध गुटकू के पेट में चला जाता। छुटकी जमीन पर हाथ-पांव मार कर दहाड़ने लगती।

गुटकू दूध पी-पीकर मोटा हो गया। गुड्डू बब्बू उसे अकेला पाते तो टांग पकड़ कर घसीट देते। उसके चुटकियां काट लेते। उसकी मुट्ठी में भिंची रोटी का टुकड़ा छीन लेते।

तारा परेशान होती। जब तारा गुटकू को गोद में लेती तो छुटकी भी गोद में चढ़ने की जिद करती। तारा उसे झिटक देती। छुटकी रोती हुई विश्वकर्मा की पीठ पर चढ़

जाती। विश्वकर्मा का हाथ हिल जाता। मूर्तियां बिगड़ जातीं। वे पहले-जैसी न बिकतीं। धीरे-धीरे विश्वकर्मा की साख भी घटने लगी।

विश्वकर्मा ने फिर विनाश देव के सामने मत्था टेक दिया। तारा फिर से गर्भवती हो गई। तारा को बहुत चक्कर आने लगे। खाना देखते ही उसे मितली आती थी। पेट हरदम खाली रहता था। ताकत आती नहीं थी। खून कम होता जाता था। बच्चे चिपटते तो पांव लड़खड़ा जाते थे।

बच्चा हुआ तो लेने के देने पड़ गए। तारा के मरा हुआ बच्चा पैदा हुआ। सारे शरीर में जहर चढ़ गया। खून फव्वारे की तरह बहने लगा। किसी तरह विश्वकर्मा तारा को बड़े अस्पताल ले गया। वहां डाक्टरों ने उसे दो बोतल खून चढ़ाया। खून भी विश्वकर्मा को देना पड़ा। तब कहीं जाकर तारा बच पाई। उसके इलाज में विश्वकर्मा की सारी जमा-पूंजी निकल गई।

जब तारा अस्पताल में थी तो गुड्डू बब्बू लड़ पड़े। उन्होंने एक दूसरे को पत्थर मारे। विश्वकर्मा अस्पताल से घर लौटा तो दोनों बच्चे लहूलुहान पड़े थे। उन्हें देखते ही विश्वकर्मा की जान फिर मुसीबत में आ गई। वह उन्हें भी लेकर उलटे पैर अस्पताल दौड़ पड़ा।

विश्वकर्मा को विनाश देव पर बहुत गुस्सा आया। वह रोता हुआ बोला—हे देव ! मैं तुम्हारी जितनी ही पूजा करता हूं तुम मुझ पर उतना ही कहर ढाते हो। अब मैं तुम्हें नहीं रखूंगा।.....

विश्वकर्मा ने विनाश देव को नदी में बहा दिया।

उसकी जगह लक्ष्मी की मूरत लाकर रख दी। उसी दिन अस्पताल की डाक्टरनी ने बताया—

अधिक बच्चों से घर का विनाश होता है। बरबादी होती है ! तुम पहले ही दो बच्चों के बाद रोक लगा देतीं तो ठीक रहता ! तुम्हारी यह बुरी हालत न होती।

कम बच्चे रहने से न बच्चे बिगड़ते, न तुम्हारी सेहत बिगड़ती। अब याद रखना—

छोटा परिवार–सुखी परिवार !□

लाखों से एक भला

कश्यप मुनि की दो स्त्रियां थीं। एक का नाम था विनता। दूसरी का नाम था कदरू।

कदरू के लाखों बच्चे हुए। वे सांप थे। दुबले-पतले थे। टेढ़ी-बांकी चाल चलते थे। आड़ी-तिरछी चाल कदरू को बहुत अच्छी लगती थी।

जैसी टेढ़ी उनकी चाल थी, वैसा ही टेढ़ा उनका स्वभाव भी था। कदरू उनको संभाल नहीं पाती थी। एक को संभालती, दो को संभालती। लेकिन हजारों-लाखों को भला कैसे संभालती? वह न तो उन्हें हट्टा-कट्टा और तगड़ा बना पाई, न लायक बना पाई।

विनता के केवल दो ही बच्चे हुए। बड़े का नाम था अरुण और छोटे का गरुड़। अरुण पैदा होते ही सूरज के पास चला गया और उनका सारथी बन गया।

विनता के पास एक अकेला गरुड़ ही था। वह हर

समय उसे अच्छी-अच्छी बातें सिखाती। सीधी चाल चलना सिखाती। सत्य अहिंसा का पाठ पढ़ाती।

विनता के सारे शरीर की ताकत दो बच्चों में ही लगी। इसलिए वे बलशाली निकले। गरुड़ खूब लम्बा-चौड़ा हुआ। वह हिम्मती था। ताकतवर भी था। वह आकाश में दूर-दूर तक उड़ानें भरता था।

एक दिन कदरू और विनता खिड़की के पास खड़ी थीं। तभी सामने से एक घोड़ा निकला। घोड़ा सफेद था। उसका नाम था अश्वैश्रवा।

कदरू ने कहा—कहो बहन ! घोड़े का रंग कैसा है ?

विनता ने कहा—घोड़े का रंग सफेद है। कदरू ने कहा—नहीं ! घोड़े का रंग काला है।

बात करते-करते घोड़ा वहां से चला भी गया। कदरू ने कहा—कल यह घोड़ा फिर से इधर आएगा। तब हम दोनों फिर से उसका रंग देखेंगी। अगर वह घोड़ा काला निकला तो तुम मेरी दासी हो जाना।

विनता ने कहा—ठीक है बहन ! अगर वह सफेद निकला तो तुम मेरी दासी बन जाना। कदरू ने अपने बेटों को बुलाया। उसके काले-काले, दुबले-पतले बच्चे सरसराते हुए आए। वे बिलकुल मरगिल्ले घिनौने-से थे। उनमें इतना भी दम नहीं था कि वे खड़े होकर चलते। उनमें से किसी के पांव भी नहीं बन पाए। बात करते समय बस जरा-सा फन उठा देते !

मां ने उनसे कहा—तुम सब अश्वैश्रवा से चिपट जाओ। तुम उसका अंग-अंग ढंक देना। तुम्हारे चिपट जाने से वह काला दिखेगा।

कदरू के सारे बच्चे आननफानन में घोड़े से चिपट गए। उनके चिपट जाने से घोड़ा काला दिखने लगा।

अगले दिन कदरू और विनता आईं। वे फिर से खिड़की के पास खड़ी हो गईं। अश्वैश्रवा फिर वहां से निकला। घोड़ा काला दिखाई दिया।

कदरू जीत गई, विनता हार गई।

विनता कदरू की दासी बन गई। विनता समझ गई कि इसमें कदरू की चालबाजी है।

विनता का दूसरा पुत्र था गरुड़। मां के साथ-साथ गरूड़ को भी कदरू का दास बनना पड़ा। मां को दासीगीरी करते देख उसे बहुत दुख हुआ। वह कदरू के पास गया। बोला—मैं तुम्हारी हर बात मानने को तैयार हूं, लेकिन मेरी मां को आजाद कर दो।

कदरू ने कहा—मैं तुम्हारी मां को एक ही शर्त पर

आजाद कर सकती हूं। वह है अमरित का घड़ा। तुम मुझे अमरित का घड़ा ला दो।

गरुड़ ने कहा—ठीक है, ला दूंगा।

गरूड़ गया देवराज इन्द्र के पास। उसने इन्द्र से सारी बात कही।

इन्द्र ने अमरित का घड़ा गरुड़ को दे दिया। गरुड़ अमरित का घड़ा अपने साथ लेकर उड़ चला।..... .

तभी इन्द्र ने सोचा—अमरित पीकर तो सांप अमर हो जाएंगे। फिर ये सांप हमेशा मनुष्यों को डंसा करेंगे। मनुष्य इनका कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। यह सोचकर इन्द्र बेचैन हो गया। वह गरुड़ के पीछे-पीछे उड़ चला।

गरुड़ ने कदरू के पास जाकर कहा—लो यह अमरित। अब करो मेरी मां को आजाद !

कदरू ने कहा—अरे, तुम तो सचमुच अमरित ले आए ! ठीक है, मैं आज से विनता को आजाद करती हूं। विनता के साथ मैं तुझे भी आजाद करती हूं।

गरुड़ अपनी मां विनता को पीठ पर बैठा कर उड़ गया। कदरू अपने बच्चों को अमरित पिलाने के लिए बेचैन थी। वह उन्हें बुलाने गई।

इतने में इन्द्र आया। वह अमरित का घड़ा उठाकर ले भागा।

कदरू के बच्चे दौड़े आए, लेकिन वे इन्द्र से लड़ नहीं सकते थे ; फिर भला अमरित का घड़ा कैसे छीनते ! वे तो उड़ना क्या—खड़े भी नहीं हो सकते थे।

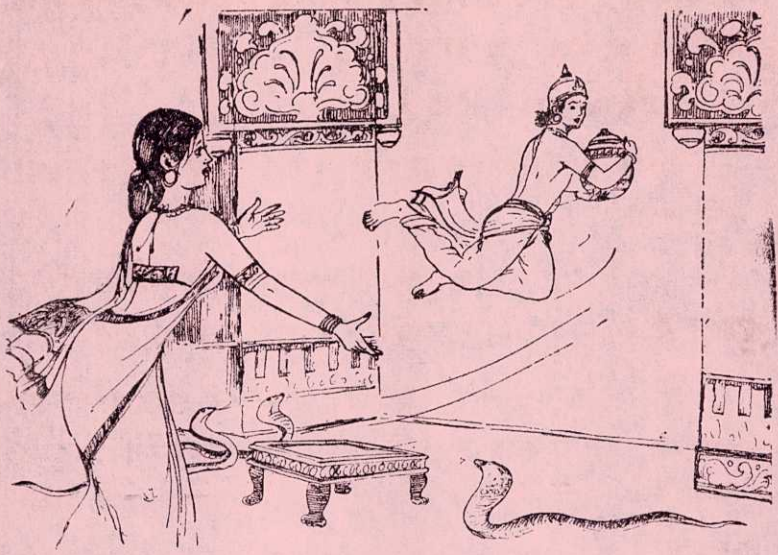

अगर कदरू विनता की तरह एक-दो बच्चे ही पैदा करती तो वे बलवान भी होते, और किसी काम के भी होते।

सच है, पूनम का अकेला चांद जितना उजाला फैलाता है, उतना लाखों तारे नहीं फैला सकते !

□□□

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002